संपादकीय

शिक्षा विमर्श के प्रकाशन की शुरुआत मार्च 1998 में हुई थी और अभी इसे 15 साल से अधिक हो चुके हैं। बीसवीं सदी का अन्तिम दशक भारत में शिक्षा के लिए महत्त्वपूर्ण रहा है। इस दशक में आरंभिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के लिए अनेक सरकारी एवं गैर-सरकारी योजनाएं देशभर में व्यापक स्तर पर आरंभ की गई थीं और सरकारी एवं गैर-सरकारी परियोजनाओं में शिक्षा में काम आरंभ करने वाले लोगों का एक बड़ा समूह उभर रहा था। इनके लिए शिक्षा पर समझ विकसित करने के लिए अनेक तरह के प्रशिक्षणों एवं उन्मुखीकरण कार्यक्रमों की रूपरेखाएं तैयार हुईं। शैक्षिक बदलाव की दिशा में कार्यरत संस्थाओं और समूहों को शिक्षा पर सम्यक समझ विकसित करने के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा साहित्य की जरूरत महसूस हुई। इस दौर में और इसी विचार के साथ शिक्षा विमर्श का प्रकाशन आरंभ करने की योजना बनी।

शिक्षा को आन्दोलन की तरह सभी तक पहुंचाने का वह दौर अभी लगभग खत्म हो चुका है लेकिन दस लाख से अधिक स्कूलों की व्यापक शिक्षा व्यवस्था में शिक्षा पर गुणवत्तापूर्ण साहित्य उपलब्ध करवाने वाली पत्र-पत्रिकाएं अंगुलियों पर गिनी जा सकती हैं और हिन्दी में तो यह संख्या निराशाजनक रूप से नगण्य है। शिक्षा विमर्श के पन्द्रह साल के लघु इतिहास में कई उतार-चढ़ाव और आशा-निराशा के मौके आए हैं। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री पर कुछ गंभीर तो कुछ अगंभीर प्रतिक्रियाएं आईं। पिछले वर्षों में अनेक सामयिक मुद्दों पर विशेषांक प्रकाशित हुए हैं। शिक्षा विमर्श का प्रकाशन दिगन्तर की एक हठ का ही परिणाम है। एकाधिक बार बिना किसी वित्तीय सहायता के भी संस्था ने अपने प्रयासों से प्रकाशन जारी रखा है। पिछले करीब डेढ़ वर्ष से शिक्षा विमर्श का प्रकाशन वित्तीय सहायता के अभाव में ही चलता रहा है। जून 2013 से शिक्षा विमर्श के नियमित प्रकाशन के लिए अजीम प्रेमजी यूनीवर्सिटी, बैंगलोर ने आरंभ में दो साल के लिए वित्तीय सहायता देना तय किया है। इस अंक से शिक्षा विमर्श का प्रकाशन दिगन्तर एवं अजीम प्रेमजी यूनीवर्सिटी का संयुक्त प्रकाशन होगा।

पिछले पन्द्रह साल के अनुभवों को ध्यान में रखते हुए शिक्षा विमर्श के स्वरूप में कई बदलाव लाने की आवश्यकता महसूस हो रही है। शिक्षा विमर्श का ध्येय शिक्षा की सैद्धान्तिक समझ और व्यवहार के बीच सेतु कायम करना रहा है। इसके साथ ही जमीनी स्तर पर हो रहे कार्यों के अनुभवों को साझा करना और शिक्षा की सामयिक बहसों, नीतियों पर पाठकों के साथ आलोचनात्मक संवाद कायम करना रहा है। शिक्षा विमर्श या किसी भी पत्रिका के सामने यह सवाल उठता है कि उसका पाठक वर्ग कौन है? हमारा पिछला अनुभव हमारा ध्यान इस तरफ खींचता है कि शिक्षा विमर्श को अपना ध्येय शिक्षा में प्रवेश करने वाले या शिक्षा में विभिन्न स्तरों पर जमीनी कार्य करने वाले लोगों को शिक्षा में शिक्षित करना निर्धारित करना चाहिए। इस मायने में हमें अनेक चुनौतियां भी दिखाई देती हैं; जैसे कि किसी भी गंभीर बहस को कैसे सहज और बोधगम्य तरीके से पेश किया जाए ताकि पाठक न सिर्फ समझ सकें बल्कि स्वयं भी सोचना आरंभ करें? अनुवाद की नीरसता और जटिलता से कैसे पार पाई जाए? वह कौनसा समूह होगा जो हिन्दी में इस तरह का साहित्य लिखेगा? सिद्धान्त और व्यवहार के रिश्तों को बोधगम्य तरीके से कैसे पेश किया जाए? जमीनी स्तर पर चल रहे कार्यक्रमों के अनुभवों को पत्रिका में कैसे लाया जाए?

इसी मंथन से शिक्षा विमर्श की एक नई कार्य योजना विकसित हुई है और इस योजना के अनुसार पहला अंक जनवरी-फरवरी, 2014 में प्रकाशित होगा। इस दिशा में हम कार्य कर रहे हैं। शिक्षा विमर्श अपने मकसद में सफल हो सके इसके लिए आप सभी के सहयोग और सुझावों की अपेक्षा है। हम चाहते हैं कि शिक्षा विमर्श एक साझा मंच के तौर पर विकसित हो जहां शैक्षिक मुद्दों पर गंभीर बहस को जन्म दिया जा सके। नई योजना में कुछ नए कॉलम प्रस्तावित हैं ताकि उन क्षेत्रों में प्रमाणिक सामग्री विकसित हो सके जो अभी तक हिन्दी में अछूते हैं। ◆